लाल बहादुर शास्त्री गन्ना किसान संस्थान उ0प्र0 लखनऊ

सक्सेज स्टोरी

लाल बहादुर शास्त्री गन्ना किसान संस्थान उ0प्र0 लखनऊ, प्रदेश के गन्ना किसानों एवं विभागीय/चीनी मिल अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु समर्पित संस्थान है, जो अपनी स्थापना वर्ष 1975 से ही गन्ना किसानों को तकनीकी ज्ञान, नवीनतम वैज्ञानिक शोध व प्रशिक्षण के माध्यम से उनके आर्थिक विकास में सहयोगी रहा है। गन्ना संस्थान मुख्यालय, लखनऊ तथा इसके अधीन पांच प्रशिक्षण केन्द्र भी कार्य कर रहे हैं :–

1– गोरखपुर
2– गोण्डा
3– मुरादाबाद
4– शाहजहॉपुर
5– मुजफ्फरनगर

उद्देश्यः–

- गन्ना उत्पादन की नवीनतम वैज्ञानिक विधियों से प्रदेश के कृषकों तथा विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षित करना।
- प्रशिक्षण को सरल और सुग्राह्य बनाने के लिए आधुनिक श्रव्य–दृश्य माध्यमों से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।
- पत्र–पत्रिकाओं, पैम्पलेट्स और पोस्टर आदि प्रकाशित कर गन्ने की उन्नतशील खेती का प्रचार–प्रसार करना।
- गन्ना विकास से सम्बन्धित किसान मेलों, प्रदर्शनियों, विचार गोष्ठियों एवं सामूहिक सभाओं का आयोजन करना।
- गन्ना प्रजनन एवं कृषि की नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों एवं प्रबन्ध प्रक्रियाओं को प्रत्यक्ष भ्रमण के माध्यम से समझने हेतु प्रदेश, देश एवं विदेश में कृषकों/अधिकारियों की अध्ययन यात्राएं आयोजित करना।
- गन्ने की उत्पादकता तथा चीनी परता बढ़ाने के लिए गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग तथा शोध संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए प्रदेश के कम गन्ना उत्पादक क्षेत्रों में सघन प्रशिक्षण द्वारा किसानों को जागरूक करना।

प्रदेश में प्रति हेक्टेअर गन्ने की औसत उपज बढ़ाने तथा चीनी परता में सुधार करने के मौलिक उद्देश्य में यह संस्थान सतत् प्रयत्नशील रहा है तथा सफल भी हुआ है। गन्ना किसानों की आय को दोगुनी करने हेतु गन्ना विकास एवं चीनी उद्योग के अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कृषकों को एक ही प्लेटफार्म पर लाकर उनके सामंजस्य के द्वारा अपने प्रभावी प्रशिक्षणों, अध्ययन यात्राओं एवं प्रदर्शन प्रक्षेत्रों के भ्रमण के माध्यम से यह संस्थान गन्ना किसानों की प्रगति का पर्याय बना हुआ है।

लाल बहादुर शास्त्री गन्ना किसान संस्थान, द्वारा मुख्यालय तथा अपने प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से प्रदेश के समस्त गन्ना बहुल जनपदों में प्रति वर्ष 75000 गन्ना कृषकों तथा

2400 कर्मचारियों/अधिकारियों को प्रशिक्षित किया जाता है। किसानों को गन्ना गोष्ठियों, किसान मेलों, प्रदर्शनियों, सामूहिक सभाओं एवं कृषक प्रक्षेत्रों में फील्ड डे आयोजित कराकर गन्ना संस्थान के विशेषज्ञों, गन्ना शोध के वैज्ञानिकों, प्रगतिशील गन्ना कृषकों, गन्ना विकास विभाग तथा चीनी मिल के अधिकारियों की वार्ताओं, दृश्य–श्रव्य उपकरणों के माध्यम से गन्ना खेती सम्बन्धी अद्यतन तकनीकी की जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।

गन्ना प्रजनन एवं शोध संस्थानों के प्रक्षेत्रों की प्रत्यक्ष जानकारी उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रति वर्ष प्रदेश के अन्दर तथा प्रदेश के बाहर गन्ना कृषकों/अधिकारियों की अध्ययन यात्राओं व प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

कृषि प्रसार तकनीकों को किसानों तक सरलता से पहुँचाने हेतु गन्ना विकास विभाग एवं चीनी मिल अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया जाता है, जिसमें गन्ना विकास एवं विपणन, कम्प्यूटर प्रशिक्षण, कार्यालय एवं वित्तीय प्रबंधन, रिफ्रेशर कोर्स तथा नवनिर्वाचित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को फाउण्डेशन कोर्स के माध्यम से विभाग संबंधी आधारभूत प्रशिक्षण दिया जाता है। चीनी मिल अधिकारियों को शुगर क्वालिटी एवं रिकवरी मैनेजमेंट, प्लांट मेन्टीनेंस तथा ब्वॉयलर मेन्टीनेंस सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि चीनी मिलें बेहतर प्रबंधन के साथ संचालित हों और चीनी परता में प्रदेश शीर्ष स्थान पर बना रहे।

विभाग व चीनी मिल के अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रशिक्षण हेतु मुख्यालय गन्ना संस्थान में 60 सीटों वाला वातानुकूलित प्रशिक्षण कक्ष है, किन्तु छात्रावास में लगभग 30 प्रशिक्षणार्थियों के ठहरने की ही व्यवस्था होने के कारण दो या तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मात्र 30 की संख्या में ही प्रशिक्षणार्थियों को आमंत्रित किया जाता है, किन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों जिनका शीघ्र प्रचार–प्रसार आवश्यक होता है यथा– ट्रैंच विधि, पेड़ी प्रबंधन, ड्रिप इरीगेशन, सहफसली खेती, बायो–कम्पोस्ट तथा ट्रैंच मल्चिग आदि विषयों पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाता है, जिसमें 50–60 प्रतिभागियों को आमंत्रित किया जाता है तथा एक दिवसीय सघन प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाता है।

प्रशिक्षणार्थियों के अध्ययन हेतु मुख्यालय में पुस्तकालय एवं वाचनालय स्थापित है, जिसमें विभिन्न विषयों से संबंधित लगभग 8000 पुस्तकें उपलब्ध हैं। प्रशिक्षणार्थियों के अध्ययन हेतु हिन्दी/अंग्रेजी के दैनिक समाचार पत्र, पत्रिकायें, न्यूज लेटर्स व रिर्सच पेपर आदि भी उपलब्ध हैं। कम्प्यूटर प्रशिक्षण हेतु 20 कम्प्यूटरों वाली वातानुकूलित प्रशिक्षण लैब स्थापित है, जिसमें हाई स्पीड इण्टरनेट कनेक्टिविटी, आई.एस.डी.एन सहित कम्प्यूटर नेटवर्किंग की सुविधा है। प्रिव्यू टेक्नोलोजीज के एक्सपर्ट्स द्वारा कम्प्यूटर संबंधी आधारभूत प्रशिक्षण दिया जाता है।

गन्ना किसान संस्थान में 468 सीटों वाला भव्य आधुनिक वातानुकूलित ऑडिटोरियम है, जो आधुनिक विद्युत एवं ध्वनि उपकरणों से सुसज्जित है, जिसकी ऑनलाइन बुकिंग उपलब्ध है। इस ऑडिटोरियम को लखनऊ की प्रतिष्ठित श्रोतशालाओं में गिना जाता है तथा यहॉ वर्ष पर्यन्त विभिन्न विषयों/क्षेत्रों के उच्चस्तरीय कार्यक्रम आयोजित होते रहते है। श्रोतशाला की बुकिंग से संस्थान को प्रति वर्ष लगभग 45 लाख रूपये की आय होती है।

संस्थान में 80 सीटों वाला वातानुकूलित सभाकक्ष है जो एलसीडी प्रोजेक्टर एवं व्हाइट बोर्ड पी.ए. सिस्टम आदि से सुसज्जित है, जहॉ उच्चस्तरीय आधिकारिक मीटिंग्स व वैज्ञानिकों/अधिकारियों की इण्टरफेस मीटिंग्स आदि का आयोजन होता रहता है।

गन्ना किसान संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का आंकलन
(Impact analysis)

गन्ना किसान संस्थान द्वारा गन्ना विकास विभाग, शोध केन्द्रों एवं चीनी मिलों के सामंजस्य से आयोजित कराये जा रहे, प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कृषकों में बड़ी संख्या में ऐसे कृषक हैं जिनका औसत उत्पादन कभी–कभी प्रदेश के औसत उत्पादन से दो गुना तक हो जाता है। ऐसे जागरूक कृषक जो प्रशिक्षण सत्रों में भाग लेते है उन्हें ही अध्ययन यात्राओं हेतु अर्ह माना जाता है। बसंत दादा शुगर इंस्ट्टीयूट पुणे, गन्ना प्रजनन केन्द्र, कोयम्बटूर और क्षेत्रीय केन्द्र करनाल में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले कृषकों में प्रगतिशीलता स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है।

गन्ना किसान संस्थान मुजफ्फरनगर के क्षेत्र में ग्राम तितावी के प्रगतिशील कृषक श्री उमेश कुमार, महिपाल सिंह आदि ने संस्थान के निर्देशन में न केवल 1500 कु0 है. से अधिक गन्ना उत्पादन किया है वरन् गन्ने में ट्रैन्च विधि से खेती करने के साथ–साथ गन्ने की फसल में केला, पपीता, चना आदि की सहफसली खेती करके प्रति है0 लगभग 3 लाख रू0 की अतिरिक्त आय भी प्राप्त की है।

ग्राम बडकली के कृषक ओमकार त्यागी, ग्राम बधाई कला के अरविन्द मलिक सरीखे तमाम किसानों ने संस्थान के सतत् प्रशिक्षणों में भाग लेते हुए गन्ने के साथ सब्जी वर्गीय व मसाला वर्गीय फसलों यथा आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, धनिया, मेथी, मूली जैसी फसलों की सहफसली खेती करके न केवल अपनी आय दो गुनी से अधिक की है, वरन् उ0 प्र0 तथा हरियाणा प्रदेश में प्रगतिशीलता के पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं।

ग्राम बेहड़ा सादात के कृषक श्री सुधीर कुमार बताते हैं कि गन्ना संस्थान की अध्ययन यात्रा में वी.एस.आई. पूना जाने पर खेती में और अधिक रूचि बढ़ी तथा गन्ने की दूरी बढ़ाने पर उपज में भी बढ़ोत्तरी हुई। गन्ने में ड्रिप लगाने पर उत्पादन लगभग 125 कु0 बीघे तक पहुॅच गया और खाद पानी में भी काफी बचत हो गई। गन्ने के साथ–साथ खीरे की पॉली हाउस लगाकर खेती की। खीरे की प्रजाति हिल्टन मल्टीस्टार के 2000 वर्ग मी. क्षेत्रफल में लगभग 8000 पौधे लगाये। एक पौधे से 4–6 कि.ग्रा. खीरा मिलता है जिसे 25 से 30 रू0 प्रति किलो तक बेच देते हैं। इस तरह तीन बीघे खेत से लगभग 8–9 लाख रूपये तक का खीरा पैदा हो जाता है।

गन्ना किसान कहते है कि गन्ना संस्थान तथा अन्य संस्थानों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों से यह अनुभव किया कि खेती में विविधीकरण अत्यंत लाभकारी है। हम फूलों तथा सब्जियों की भी लाभकारी खेती कर रहे है।

इसी प्रकार अन्य प्रशिक्षण केन्द्रों के बहुत ऐसे किसान है जो कम लागत से अधिक उत्पादन के साथ–साथ ड्रिप सिंचाई, जैविक खेती, सहफसली खेती, तथा जैविक कीटनाशकों का प्रयोग कर स्वस्थ फसल का भी उत्पादन कर रहे हैं।